



प्रीलमिस फैक्ट्स : 02 मई, 2018

अंतर्राष्ट्रीय मज़दूर दविस

1 मई को अंतर्राष्ट्रीय श्रमिक दविस के अवसर पर गूगल ने दुनिया भर के श्रमिकों को याद करते हुए विशेष डूडल तैयार किया। इस डूडल में हर क्षेत्र से जुड़े श्रमिकों के उपकरणों को शामिल किया गया। गूगल द्वारा कतिब, चम्मच, पाइप, सुरक्षा हेलमेट, बैटरी, नट बोल्ट जैसी छोटी-छोटी चीजों को शामिल करते हुए यह डूडल तैयार किया गया।

- अंतर्राष्ट्रीय मज़दूर दविस की शुरुआत 1 मई, 1886 से हुई। 1886 में अमेरिकी मज़दूर संघों द्वारा यह नश्चय किया गया कि 8 घंटे से अधिक काम नहीं करेंगे, अपनी मांग के समर्थन में उन्होंने हड़ताल शुरू कर दी।
- इस हड़ताल के दौरान शिकागो के हेमार्केट में एक बम वस्फोट हुआ, जिसमें 100 से अधिक लोग घायल हुए। इस घटना की प्रतिक्रिया में पुलिस द्वारा जवाबी कार्रवाई में मज़दूरों पर गोली चला दी गई और इसमें कई मज़दूरों की मौत हो गई।
- इसके बाद 1889 में अंतर्राष्ट्रीय समाजवादी सम्मेलन में हेमार्केट हत्याकांड में मारे गए नरिदोष श्रमिकों की याद में 1 मई को अंतर्राष्ट्रीय मज़दूर दविस के रूप में मनाने का नश्चय किया गया। तब से दुनिया भर में यह दविस सभी कामगारों व श्रमिकों के सम्मान में आयोजित किया जाता है।

भारत में मज़दूर दविस की शुरुआत

- भारत में मज़दूर दविस कामकाजी लोगों के सम्मान में मनाया जाता है। भारत में लेबर कंसिान पार्टी ऑफ हनिदुस्तान द्वारा 1 मई, 1923 को मद्रास में इसकी शुरुआत की गई। हालाँकि उस समय इसे मद्रास दविस के रूप में मनाया गया था।

आईआईटी कानपुर का नया आवषिकार

भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान (आईआईटी) कानपुर ने पर्यावरण संरक्षण की दशा में एक बड़ी उपलब्धि हासिल की है। केमिकल इंजीनियरिंग विभाग ने बिना लकड़ी के इस्तेमाल से ऐसा कागज नश्चिमा किया है जिस पर कई बार लिखा जा सकता है। विशेष बात यह है कि इस पर लिखे शब्दों और चित्रों को सामान्य गीले कपड़े से साफ़ किया जा सकता है।

- आईआईटी कानपुर द्वारा इस खोज का पेटेंट करा लिया है, साथ ही इसके अंतर्राष्ट्रीय पेटेंट की प्रक्रिया प्रगत पर है।
- इस कागज के नश्चिमाण में रसायनों के अलावा पॉलीमर कोटिंग का इस्तेमाल किया गया है।
- वर्तमान में संस्थान में आयोजित सभी परीक्षाओं में इन्हीं कागजों का इस्तेमाल करते हुए प्रश्न-पत्रों को तैयार किया गया है। परीक्षा के बाद छात्रों से इन प्रश्न-पत्रों को वापस ले लिया जा रहा है ताकि इनका पुनः इस्तेमाल किया जा सके।
- इतनी अधिक संख्या में इन कागजों को साफ करने के लिये सस्ते केमिकल की खोज कर रही है। हालांकि पानी व गीले कपड़े से इस प्रटिड पेपर को साफ़ किया जा सकता है।
- डी-प्रटिड बनाने के लिये सगिपुर से करार कंप्यूटर से छपे खास तरह के पेपर को साफ करने के लिये डी-प्रटिड बनाया जा रहा है।
- आईआईटी कानपुर और सगिपुर के तकनीकी इंस्टीट्यूट से करार हुआ है। इसमें खास तरह की सस्ती स्याही का इस्तेमाल होगा, जो छपे हुए कागजों को फरि से साफ कर सकेगी।

पुंगनूर नसल

आंध्र प्रदेश स्थिति तरिपता बालाजी मंदिर में लड्डु का भोग चढ़ाने की परंपरा है। इस भोग को श्रीवारी कहा जाता है। यहाँ ऐसा माना जाता है कि यह भोग चढ़ाए बिना दर्शन पूरे नहीं होते हैं। इस भोग की विशेष बात यह है कि ये लड्डु केवल पुंगनूर नसल की गाय के दूध से बने मावे/खोये से तैयार किये जाते हैं। परंतु, समस्या यह है कि इस नसल की गायों की संख्या में बहुत तेज़ी से गरिवट आ रही है, वर्तमान में इस नसल की बहुत कम गाय ही बची है। ऐसे में भोग की इस परंपरा को लेकर चिंता की स्थिति बन गई है।

- मुख्य समस्या यह है कि इस विशेष प्रकार की नसल की वंशवृद्धि नहीं हो पा रही है। वर्तमान में आंध्र प्रदेश में केवल 130 गाय ही बची है।
- इस समस्या की गंभीरता पर वचिार करते हुए बलिसपुर, छत्तीसगढ़ के पशु चिकित्सकों के साथ मलिकर आंध्र प्रदेश सरकार द्वारा सरोगेसी तकनीक

के माध्यम से पुंगनूर गाय की वंशवृद्धि करने का प्रयास किया जा रहा है।

- ससुरगेसी तकनीक में परखनली वधिसे नर-मादा (डोनर) के अंडाणु व शुक्राणुओं का मेल कराकर भ्रूण को कसीं अन्य कोख (सुरगेट मदर) में परतयारोपति कर दधल जाता है।
- पुंगनूर नसल को डोनर के रूप में इस्तेमाल करते हुए पोंगुल नसल की गाय को सुरगेट माँ बनाया गया।
- वशेष बात यह है कइस तकनीक से उत्पन्न हुए बच्चे में पुंगनूर (डोनर) के शत-परतशत गुणसूत्र पाए गए हैं। इस तकनीक की सहायता से अभी तक पुंगनूर नसल की 20 बछया पैदा की जा चुकी हैं।

गैनीमीड पर तूफानी पर्यावरण

अमेरकी अंतरकष एजेंसी नासा के अंतरकष यान 'गैलीलयो' से प्राप्त डेटा में बृहस्पति के चंद्रमा गैनीमीड पर तूफानी पर्यावरण की जानकारी मली है। 1995-2003 की अवधि के मध्य गैलीलयो प्रोब को बृहस्पति ग्रह की कक्षा में भेजा गया था। इसके बाद बृहस्पति ग्रह की परकिरमा करने के लये जूनो नामक अंतरकष यान को भेजा गया।

- 'गैलीलयो' ने बृहस्पति की परकिरमा करते हुए आठ वर्ष बतिए हैं। गैलीलयो ने बृहस्पति के चंद्रमा के वषिय में कई महत्त्वपूर्ण जानकारी प्रदान की है। इससे प्राप्त नए डेटा में गैनीमीड के वातावरण के वषिय में जानकारी प्राप्त हुई है।
- वैज्ञानिकों का मानना है कइस खोज से इस रहस्य को सुलझाने में मदद मलीगी क गैनीमीड का सूर्योदय इतना चमकदार क्यों होता है।

बृहस्पति ग्रह

- बृहस्पति सौरमंडल का सबसे बड़ा ग्रह है। इसके अब तक 67 उपग्रह ज्ञात हैं, जो सौरमंडल के अन्य ग्रहों की तुलना में सबसे अधिक हैं।
- 'गैनीमीड' बृहस्पति का सबसे बड़ा उपग्रह है। उल्लेखनीय है क बृहस्पति को लघु सौर तंत्र कहा जाता है। इसके पास स्वयं की रेडयो ऊर्जा है।
- वृत्तीय प्रकाश (Circular light), अंधेरी पट्टी (Dark band) और बारह उपग्रहों द्वारा वृत्तीय रूप से घरि रहना बृहस्पति की अद्वितीय वशेषताएँ हैं। बृहस्पति की ये वशेषताएँ उसे अन्य ग्रहों से वभिदति करती हैं।

